Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

विकासखण्ड सरसावां (जनपद सहारनपुर) में व्यावसायिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन

मनजीत सिंह
शोध छात्र, भूगोल विभाग, भारतीय महाविद्यालय, फर्रुखाबाद,उत्तर प्रदेश।
डॉ प्रेम शंकर पाण्डेय
असि0 प्रोफेसर, भूगोल विभाग, भारतीय महाविद्यालय, फर्रुखाबाद,उत्तर प्रदेश।

Article Info

Volume 7, Issue 1
Page Number : 61-68

Publication Issue :
January-February-2024

Article History
Accepted : 25 Jan 2024
Published : 15 Feb 2024

सारांश – सरसावां (जनपद–सहारनपुर) में ग्रामीण व्यावसायिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह पता चलता है, कि कार्यशील जनसंख्या (2011) का कुल प्रतिशत 36.51 है जो सहारनपुर जनपद के कुल कार्यशील जनसंख्या प्रतिशत 34.66 से अधिक है। 2011 की कृषक जनसंख्या एवं पारिवारिक उद्योग की जनसंख्या मे कमी दर्ज की गई है। कृषक मजदूर एवं अन्य कार्य के अन्तर्गत जनसंख्या में वृद्धि दर्ज की गई है। कार्यशील जनसंख्या में भी कमी आयी हैं जिसका प्रमुख कारण जीवन प्रत्याशा एवं बेरोजगारी में वृद्धि से है। अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ पर खनिज संसाधनों का अभाव है जिसके कारण खनिज आधारित उधोगों का भी अभाव हैं।

संकेत शब्दः निर्भर जनसंख्या. कार्यशील जनसंख्या. कृषक मजदूर. पारिवारिक उद्योग ।

परिचयः–जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना का आर्थिक दृष्टि से विशेष महत्व हैं, क्योंकि इससें जीविकोपार्जन की दशाओं का ज्ञान होता है। जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का तात्पर्य सम्पूर्ण क्षेत्र में कार्यरत जनसंख्या के विभिन्न कार्यों के अर्न्तगत वर्गीकरण होता हैं। जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का सामाजिक–आर्थिक एंव सांस्कृतिक विकास के विविध पक्षों से घनिष्ठ कार्यात्मक सम्बन्ध होता हैं। इससे क्षेत्र मे रहने वाले निवासियों के रहन–सहन और जीवन–स्तर का ठीक–ठीक अनुमान लगाया जा सकता है। मनुष्य अपने जीवन से सम्बन्धित जो भी कार्य करता हैं, वह उसका व्यवसाय कहलाता हैं। दूसरे शब्दों में जीवन–यापन के लिए की जाने वाली आर्थिक क्रियाओं को व्यावसाय कहते हैं।

किसी भी क्षेत्र में विभिन्न आर्थिक क्रियाओं में संलग्न जनसंख्या के स्वरूप को व्यवसायिक जनसंख्या संरचना कहा जाता है। जनसंख्या की इन आर्थिक क्रियाओं की संरचना व्यावसायिक कहलाती है। प्राथमिक अवस्था में लकड़ी काटने, चीरने, मछली पकड़ने या कंदमूल फल एकत्रित करने और विभिन्न प्रकार की फसलों को उगाने गृहकार्य, कल कारखाने स्थापित करके या सेवा, व्यापार आदि सभी कार्य लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एवं भरण पोषण के लिए करते रहे हैं। ये सभी कार्य आर्थिक क्रिया से संबंधित है तथा एक कार्य को करने वालों को व्यावसायिक संरचना के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। व्यावसायिक संरचना से ही उस

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का ज्ञान होता है कोई देश कृषि प्रधान पशुपालन अथवा उद्योग प्रदान है। व्यावसायिक संरचना व्यक्ति की व्यवसायिक स्थिति के साथ साथ विचार सामाजिक दृष्टिकोण एवं राजनैतिक संबंधता को भी प्रकट करती है। जनसंख्या में व्यवसायिक संरचना का बहुत अधिक महत्त्व होता है। जिससे उसके जीवन स्तर का भी पता चलता है। इस प्रकार व्यावसायिक संरचना के अंतर्गत कुल जनसंख्या में कार्यरत जनसंख्या में विभिन्न व्यवसाय या कार्यों की संगतता का अध्ययन किया जाता है। क्योंकि किसी क्षेत्र या देश में आर्थिक आधुनिकीकरण की दिशा में प्रगति की तीव्रता की जानकारी हुई तो विभिन्न व्यवसायों में लगी जनसंख्या का अवलोकन करना आवश्यक हो जाता है। व्यावसायिक संरचना के अतिरिक्त जनसंख्या का कोई भी पहलू ऐसा नहीं है जो देश या काल के विकास की सीमा निर्धारित कर सके। जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना द्वारा जनसंख्या के दबाव का आकलन भी किया जाता है। जिससे क्षेत्र विशेषकर आर्थिक विकास की संभावित विकास का आकलन संभव हो सकेगा। कार्यशील जनसंख्या अर्थात 15 से लेकर 59 आयुवर्ग में स्त्री और पुरुष कृषि विनिर्माण व्यावसायिक परिवहन सेवाओं संचार तथा अन्य वर्गीकृत सेवाओं जैसे व्यवसाय में भाग लेते हैं कृषि और मत्स्यन तथा खनन को प्राथमिक क्रिया, विनिर्माण द्वितीयक क्रिया और परिवहन सेवाओं को तृतीयक क्रियाओं तथा अनुसंधान और वैचारिक विकास से जुड़े कार्यों को चतुर्थक क्रियाओं के रूप में वर्गीकृत किया जाता है इन चार खंडों में कार्यशील जनसंख्या का अनुपात किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास के स्तरों का एक अच्छा सूचक है इसका कारण यह है कि केवल उद्योग और अवसंरचना संयुक्त एक विकसित अर्थव्यवस्था ही द्वितीय तृतीय एक और चतुर्थक सेक्टर में अधिक कर्मियो को समायोजित कर सकती है। यदि अर्थव्यवस्था अभी प्राथमिक अवस्था में है। तब प्राथमिक क्रिया से संलग्न लोगों का अनुपात अधिक होगा क्योंकि इससे अधिक मात्रा प्राकृतिक संसाधनों से विद्यमान हैं। जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक लाभ के विविध पक्षों से घनिष्ठ कार्यात्मक संबंध होता है। इससे क्षेत्र के रहने वाले निवासियों के रहन सहन और जीवन स्तर का ठीक ठाक अनुमान लगाया जा सकता है। मनुष्य अपने जीवन से संबंधित जो भी कार्य करता है वह उनका व्यवसाय कहलाता है। दूसरे शब्दों में जीवन यापन के लिए की जाने वाली आर्थिक क्रिया को व्यवसाय कहते है। जनसंख्या का वह भाग जो अतिक्रिया एवं सेवाओं के उत्पादन में संलग्न है। कार्यशील जनसंख्या कहलाती है इसे श्रम शक्ति जनसंख्या भी कहते हैं। जिसमें सामान्यतया 15 से 59 तक आयु वर्ग के लोग शामिल होते हैं इसके विपरीत अकार्यशील आयु में कम आयु के बच्चे सेवामुक्त व्यक्ति गृहणी विद्यार्थी या जो अपने जीवन यापन के लिए किसी अन्यक्रिया में संलग्न नहीं है तथा जनसंख्या का वह भाग जो आर्थिक दृश्य से अकार्यशील हो निर्भर जनसंख्या कहलाती है। इसमें 0 से 14 आयु वर्ग के बच्चे व 60 से अधिक आयु वर्ग के लोग समाहित होते हैं।

अध्ययन का उद्देश्यः – प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उपदेश जनसंख्या के व्यावसायिक संरचना का अध्ययन करते हुए प्रमुख विशेषता को प्रकाश में लाना है। जिससे अध्ययन क्षेत्र के संसाधन संबंधी तथ्यों का पता लगाया जा सके अध्ययन के लिए 2011 के आंकड़ों के आधार पर विकासखंड, जिला, प्रदेश तथा भारत के व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन को दिखाया गया है।

अध्ययन का विधितंत्र – प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक विधितंत्र का प्रयोग करते हुए द्वितीय स्रोतों से प्राप्त आंकड़े जो प्राथमिक जनगणना सार 2011 से लिए गए हैं। न्याय पंचायतवार अध्ययन की इकाई के रूप में चुना गया है तथा न्याय पंचायत ग्राम स्तर पर विवाद समाधान की एक प्रणाली है। इसका काम व्यापक सिद्धांत पर आधारित रहते हुए सरल बनाना तो ग्रामीण व्यावसायिक संरचना आर्थिक दृष्टि से जनसंख्या की व्यवसायिक संरचना का विशेष महत्त्व है।

अध्ययन क्षेत्र –सहारनपुर जनपद के विकासखण्ड सरसावां का अक्षांशीय विस्तार 29^{0}56′26″ उत्तर से 30^{0}10′12″ उत्तर हैं तथा देशांतरीय विस्तार 77^{0}16′35″ पूर्व सें 77^{0}34′49″ पूर्व हैं एवं इसका क्षेत्रफल 345.34 वर्ग किमी. है। विकासखण्ड की सम्पूर्ण जनसंख्या 2,58,323 (जनगणना 2011) है। विकासखण्ड सरसावा का क्षेत्र तहसील नाकुर एवं सहारनपुर में आता हैं। विकासखण्ड़ की पश्चिमी सीमा हरियाना प्रदेश के मिलती हैं। मुख्यालय से निकटतम प्रमुख नगर दिल्ली 154 किलोमीटर दक्षिण में तथा प्रदेश की राजधानी लखनऊ लगभग 650 किलोमीटर पूर्व में स्थित हैं। भारत के पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यमुना मैदान के पूर्व भाग में स्थित सहारनपुर जनपद दक्षिण

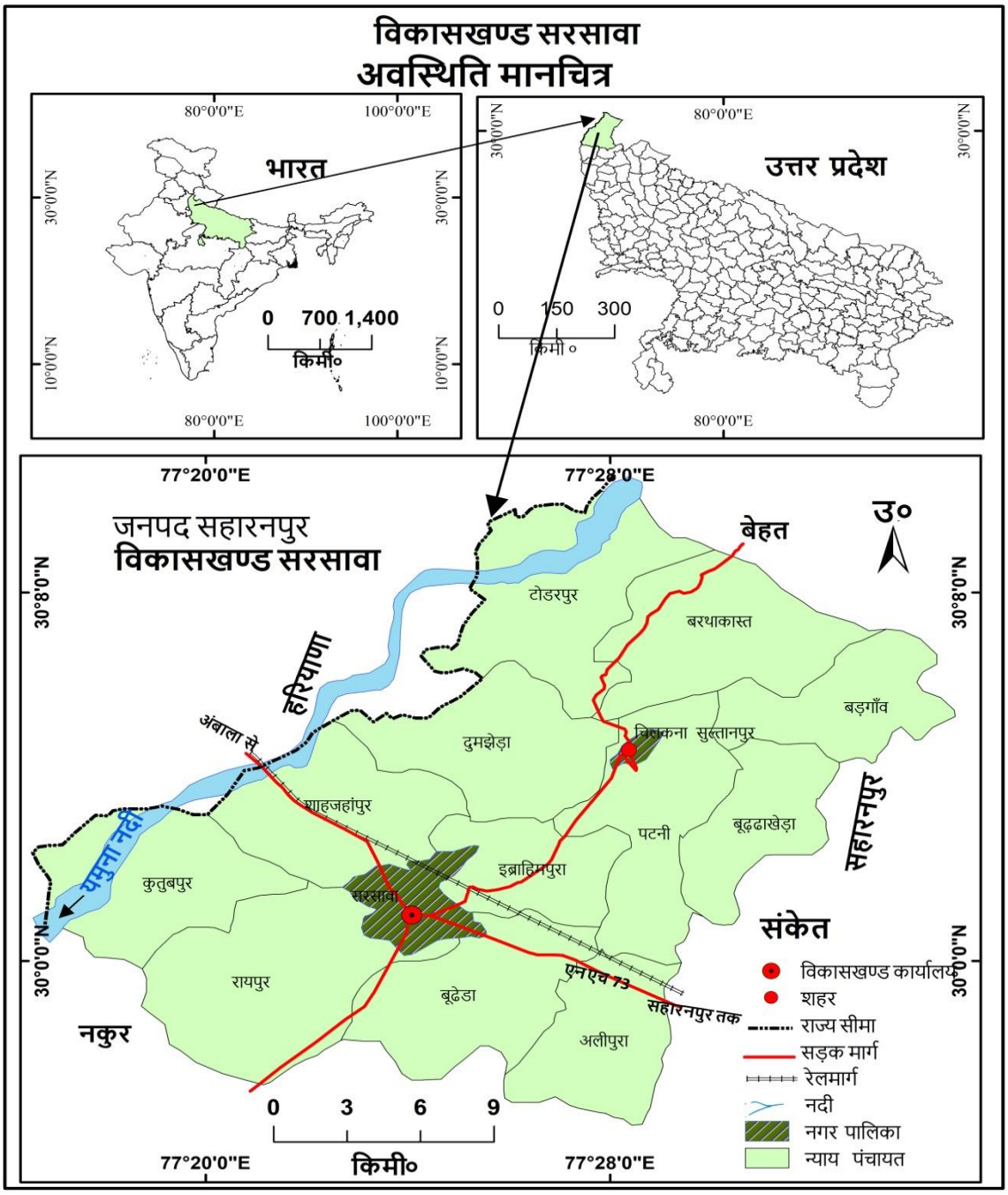

पश्चिम भाग में स्थित हैं। संरचनात्मक दृष्टिकोण से अध्ययन क्षेत्र जलोढ़ पूरित गर्त का भाग हैं। इसमें जलोढ़ का जमाव हिमालय पर्वत की निर्माण प्रकिया सें संबन्धित है जो प्लीस्टोसीन काल सें प्रारम्भ होकर अभी तक चल रहीं है। इस समतल मैदानी भू–भाग का निर्माण यमुना एवं मसकरा नदियों द्वारा लाए गये जलोढ़ सें निर्मित हुआ है।

कार्यशील और अकार्यशील जनसंख्या की तुलना (प्रतिशत में):– विकासखण्ड सरसावा में 2011 में कार्यशील जनसंख्या 29.17 प्रतिशत थी जबकि अकार्यशील जनसंख्या 70.82 प्रतिशत थी। नाकुर में कार्यशील जनसंख्या 30.12 प्रतिशत थी जबकि अकार्यशील जनसंख्या 69.87 प्रतिशत तथा सहारनपुर में कार्यशील जनसंख्या 29. 92 प्रतिशत है जबकि अकार्यशील जनसंख्या 70.07 प्रतिशत है। इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में कार्यशील जनसंख्या 32.93 प्रतिशत थी जबकि अकार्यशील जनसंख्या 67.06 प्रतिशत थी। 2011 तक भारत में कार्यशील जनसंख्या 39.79 प्रतिशत है जबकि अकार्यशील जनसंख्या 60.20 प्रतिशत है। इस प्रकार विकासखण्ड सरसावा में जहाँ ह्रास की स्थिति पायी जाती है। वहीं अकार्यशील जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई हैं। जिसका प्रमुख कारण बेरोजगारी, कृषि क्षेत्र का सीमित होना तथा विकासखण्ड सरसावा में स्थित चीनी मिल का बन्द होना है जिसके कारण अनेकों लोगों के रोजगार के अवसर सीमित हो गये।

सारणी 1. विकासखण्ड सरसावां से व्यावसायिक संरचना की तुलना 2011

नाम	जनसंख्या	कार्यशील	अकार्यशील
		जनसंख्या (प्रतिशत में)	
भारत	1210854977	39.79	60.20
उत्तर प्रदेश	199812341	32.93	67.06
सहारनपुर	3466382	29.92	70.07
नाकुर	698990	30.12	69.87
सरसावां	258323	29.17	70.82

स्रोत : प्राथमिक जनगणना सार, 2011

सारणी 2: का अध्ययन करने पर पता चलता हैं कि जहाँ 2011 में कार्यशील जनसंख्या का औसत 29.17 प्रतिशत है। जिसमें 6 न्याय पंचायत की कार्यशील जनसंख्या विकासखण्ड सरसावां बडगांव से अधिक है। षाहजहॉपुर इब्राहिमपुर कुतुबपुर रायपुर बुढेडा अलीपुरा प्रतिशत अधिक है जनगणना 2011 में जनपद सहारनपुर कार्यशील जनसंख्या 29.92 प्रतिशत है। जनपद से तुलना करने पर पॉच न्याय पंचायत की कार्यशील जनसंख्या अधिक जबकि सात न्याय पंचायत की जनसंख्या जनपद सहारनपुर से कम हैं।

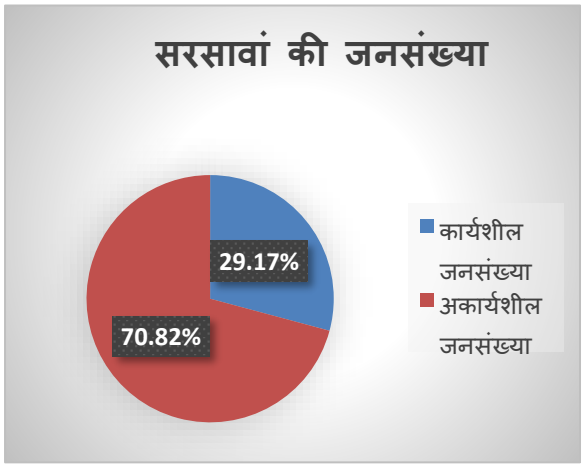

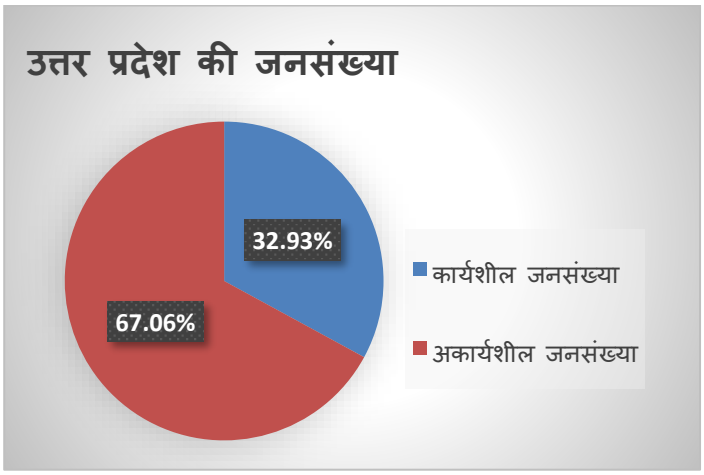

कृषकः– इस श्रेणी के अन्तर्गत वे लोग आते हैं जो अपनी स्वयं की भूमि या किराये अथवा बटायी द्वारा प्राप्त भूमि पर या तो स्वयं कृषि करते हैं या अपने देखरेख में उस भूमि पर कृषि कार्य करवाते हैं। अध्ययन क्षेत्र में लघु एवं सीमान्त कृषकों की अधिकता हैं। सारणी 2 की तुलना करने पर जहाँ विकासखण्ड सरसावा में 2011 की जनगणना के अनुसार औसत कृषक जनसंख्या 27.16 प्रतिशत थी इसमे भी न्याय पंचायत कुतुबपुर में सबसे अधिक 40.27 प्रतिशत , टोडरपुर में 32.87 प्रतिशत , दुमझेडा में 30.37 प्रतिशत , रायपुर में 28.36 प्रतिशत , बुढेडा में 27.67 प्रतिशत , औसत कृषक जनसंख्या से अधिक हैं। सबसे कम कृषक न्याय पंचायत बुढढाखेडा में 19.86 प्रतिशत एवं अलीपुरा में 21.28 प्रतिशत , इब्राहिमपुर मे 23.84 प्रतिशत , पटनी में 25.40 प्रतिशत , बडगांव में 25.75 प्रतिशत बरथाकास्त में 25.80 प्रतिशत , षाहजहॉपुर में 26.98 प्रतिशत हैं। सरसावा विकासखण्ड एक कृषि प्रधान क्षेत्र हैं, जिसके फलस्वरुप कृषक जनसंख्या अधिक है।

कृषक मजदूरः– कृषक मजदूर राष्ट्र के आर्थिक तंत्र की रीढ है। स्वतंत्रता के पश्चात से ग्रामों के विकास हेतु सरकार द्वारा विविध योजनाएँ क्रियान्वित की गयी हैं लेकिन गाँवों का विकास अति धीमी गति से हुआ हैं। अतः ग्रामीण श्रम पूर्णतः अविकसित है। ग्रामीण श्रम में कृषक मजदूर का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इनके पास अपनी कोई कृषि योग्य भूमि नहीं होती है परन्तु कृषि कार्य में अपना श्रम किराये पर देते हैं। विशेषतः कृषक मजदूरों की स्वयं की समस्याएँ हैं क्योंकि वे समाज में एक निम्न वर्ग से सम्बद्व हैं। सारणी 2 की तुलना करने पर जहाँ विकासखण्ड सरसावा में 2011 की जनगणना के अनुसार औसत कृषक मजदूर जनसंख्या 37. 15 प्रतिशत हैं। इसमें भी न्याय पंचायत टोडरपुर में सबसे अधिक 51.89 प्रतिशत एवं बरथाकास्त में 49.8 प्रतिशत, शाहजहॉपुर में 48.6 प्रतिशत बडगांव में 44.97 प्रतिशत, दुमझेडा में 44.26 प्रतिशत, कुतुबपुर में 36. 08 प्रतिशत बुढेडा में 31.50 प्रतिशत, जबकि सबसे कम न्याय पंचायत इब्राहिमपुर में 22.69 प्रतिशत, एवं रायपुर में 27.02 प्रतिशत, अलीपुरा में 28.08 प्रतिशत, बुढढाखेडा में 28.73 प्रतिशत, पटनी में 30.54 प्रतिशत हैं। कृषि मजदूरों की संख्या में दशकों में विद्यमान असमान प्रवृत्ति, कृषि कार्य में आधुनिक प्राविधिकी का अधिकाधिक उपयोग, भूमि विहीन ग्रामीण जनसंख्या का नगरीकरण, प्रवजन एवं रोजगार के अवसरों में अभिवृद्वि से सम्बन्धित हैं।

सारणी 2. विकासखण्ड सरसावां में व्यावसायिक संरचना, 2011

न्याय	कुल	कार्यशील	कार्यशील जनसंख्या (प्रतिशत में)	अकार्यशील

पंचायत	जनसंख्या	जनसंख्या	कृषक	मजदूर	पारिवारिक उद्योग	अन्य	जनसंख्या
टोडरपुर	16068	4831	32.87	51.89	0.80	14.42	11237
बरथाकास्त	25794	7135	25.80	49.85	1.96	22.38	18659
बडगांव	25034	6757	25.75	44.97	1.67	27.60	18277
दुमझेडा	24192	7243	30.37	44.26	2.37	22.98	16949
पटनी	27612	7809	25.40	30.54	1.95	42.09	19803
बुढढाखेडा	22312	6100	19.86	28.73	2.63	48.75	16212
शाहजहॉपुर	20119	6152	26.98	48.60	2.27	22.13	13967
इब्राहिमपुर	18288	5304	23.84	22.69	2.48	50.96	12984
कुतुबपुर	19706	5520	40.27	36.08	2.46	21.17	14186
रायपुर	16233	5518	28.36	27.02	3.44	41.17	10715
बुढेडा	21963	6700	27.67	31.50	3.11	37.70	15263
अलीपुरा	21002	6285	21.28	28.08	3.75	46.87	14717
योग	258323	75354	27.16	37.15	2.41	33.26	182969

स्रोत : प्राथमिक जनगणना सार, 2011

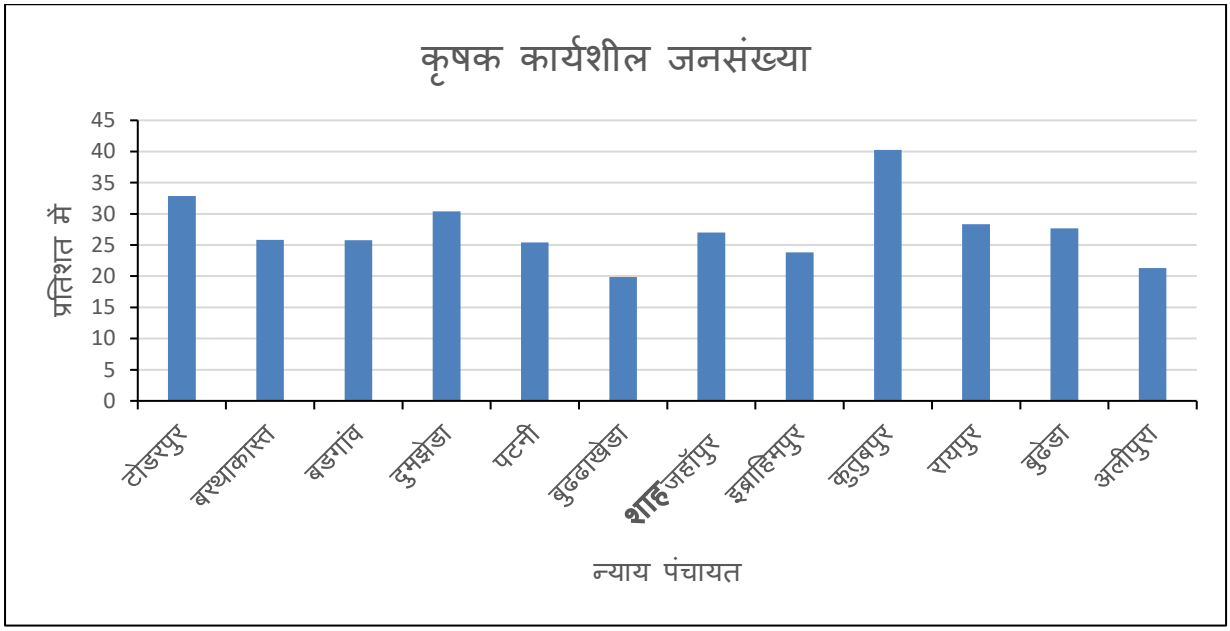

पारिवारिक उद्योगः– पारिवारिक उद्योग के अर्न्तगत घरेलू उद्योग, वाणिज्य मरम्मत का कार्य करने वाली जनसंख्या एवं लघु एवं कुटीर उद्योग में लगी जनसंख्या आती है। सारणी 2 की तुलना करने पर जहाँ विकासखण्ड सरसावा में 2011 की जनगणना के अनुसार औसत पारिवारिक उद्योग के अर्न्तगत जनसंख्या का 2.41 प्रतिशत था। इसमें भी न्याय पंचायत अलीपुरा में यह सबसे अधिक 3.75 प्रतिशत था। इसके पश्चात यह रायपुर में 3.44 प्रतिशत , बुढेडा में 3.11 प्रतिशत , बुढढाखेडा में 2.63 प्रतिशत, इब्राहिमपुर में 2.48 प्रतिशत ,

कुतुबपुर में 2.46 प्रतिशत, जो औसत जनसंख्या से अधिक था जबकि सबसे कम न्याय पंचायत टोडरपुर में 0. 80 प्रतिशत एवं क्रमशः बडगांव में 1.67 प्रतिशत, पटनी में 1.95 प्रतिशत, बरथाकास्त में 1.96 प्रतिशत, शाहजहॉपुर में 2.27 प्रतिशत , दुमझेडा में 2.37 प्रतिशत था। इस प्रकार पारिवारिक उद्योग के अर्न्तगत जनसंख्या में कमी दर्ज की गयी है। जिसका प्रमुख कारण रोजगार के लिए ग्रामीण जनसंख्या का नगर की तरफ पलायन है।

अन्य कार्य :–कृषि एवं विनिर्माण उद्योग में संलग्न व्यक्तियों के अतिरिक्त कार्यशील जनसंख्या को इस श्रेणी में रखा जाता हैं। जिनका मुख्य कार्य परिवहन, व्यापार एवं संचार होता हैं। सारणी 2 की तुलना करने पर जहाँ विकासखण्ड सरसावा में 2011 की जनगणना के अनुसार अन्य कार्य के अर्न्तगत औसत जनसंख्या का 33.26 प्रतिशत था। इसमे भी न्याय पंचायत इब्राहिमपुर में सबसे अधिक 50.96 प्रतिशत एवं न्याय पंचायत बुढढाखेडा में 48.75 प्रतिशत, अलीपुरा में 46.87 प्रतिशत पटनी में 42.09 प्रतिशत, रायपुर में 41.17 प्रतिशत , बुढेडा में 37.7 प्रतिशत, था जो औसत जनसंख्या से अधिक था। सबसे कम न्याय पंचायत टोडरपुर में 14.42 प्रतिशत था। इसके बाद क्रमशः कुतुबपुर में 21.17 प्रतिशत, शाहजहॉपुर में 22.13 प्रतिशत , बरथाकास्त में 22.38 प्रतिशत, दुमझेडा में 22.98 प्रतिशत, बडगांव में 27.6 प्रतिशत, था। इस प्रकार अन्य कार्य के अर्न्तगत जनसंख्या का अधिक भाग है।

निष्कर्षः– सरसावा (जनपद–सहारनपुर) में ग्रामीण व्यावसायिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह पता चलता है कि कार्यशील जनसंख्या (2011) का कुल प्रतिशत 36.51 है जो सहारनपुर जनपद के कुल कार्यशील जनसंख्या प्रतिशत 34.66 से अधिक है। 2011 की कृषक जनसंख्या एवं पारिवारिक उद्योग की जनसंख्या मे कमी दर्ज की गई है। कृषक मजदूर एवं अन्य कार्य के अन्तर्गत जनसंख्या में वृद्धि दर्ज की गई है। कार्यशील जनसंख्या में भी कमी आयी हैं जिसका प्रमुख कारण जीवन प्रत्याशा एवं बेरोजगारी में वृद्धि से है। अध्ययन क्षेत्र एक कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहाँ पर खनिज संसाधनों का अभाव है जिसके कारण खनिज आधारित उधोगों का भी अभाव हैं। अध्ययन क्षेत्र में मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखकर क्षेत्र के सभी लोगो को आगे लाकर ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे सम्पूर्ण जनसंख्या को रोजगार का अवसर प्राप्त हो सके और क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हो।

अध्ययन से पता चलता है कि विकासखण्ड सरसावा में कुल कर्मकार व्यक्तियों की संख्या 75354 है जिसमें कुल मुख्य कर्मकार 65013, सीमान्त कर्मकार 10341 व्यक्ति हैं। इसके अतिरिक्त पारिवारिक कार्यों में लगे व्यक्तियों की संख्या 1821, कृषक 20470 तथा कृषि श्रमिक 28000 एवं अन्य कार्य में 25063 व्यक्ति हैं।

सन्दर्भः–

1. प्राथमिक जनगणना सार, 2011
2. ओझा, आर0 एन0 (1983), जनसंख्या भूगोल, प्रतिभा प्रकाशन, कानपुर, पृ0 133–134।
3. ओझा, आर0 एन0 (1984), जनसंख्या भूगोल, प्रतिभा प्रकाशन, कानपुर, पृ0 196।
4. किम, एस0 यू0 सिन्हा, आर0 एण्ड गौर, के0 डी0 (2002), पापुलेशन एण्ड डेवलपमेण्ट, सनराईज पब्लिकेशन, न्यू देलही।
5. कृष्णा, जी0 एण्ड श्याम, एम0 (1977), लिटरेसी इन इण्डिया, जियोग्राफिकल रिव्यू आफ इण्डिया, वाल्यूम 39, पृ0 117–125।

6. गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया (1999), क्लाइमेट आफ उ0 प्र0, इ.डिया मैट्रोलाजिकल डिपार्टमेन्ट, पृ0 30
7. गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, (1978), स्टेटमेण्ट ऑफ इण्डस्ट्रियल पॉलिसी, मिनिस्ट्री ऑफ इण्डस्ट्रियल डेवलपमेन्ट, नई दिल्ली, पृ0 25।
8. पाण्डेय प्रेम शंकर (2015), बनकटी विकासखण्ड (जनपद–बस्ती) का ग्रामीण विकास एवं नियोजनः एक भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।